णिजन्त-प्रकरण (प्रेरणार्थक क्रिया) 05

तत्प्रयोजको हेतुश्च—प्रेरणार्थ में धातु के आगे 'णिच्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। जब कर्त्ता किसी क्रिया को स्वयं न करके किसी अन्य को करने के लिए प्रेरित करता है तब उस क्रिया को 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहते हैं। जैसे—

प्रवरः प्रखरं गृहं प्रेषयति। (प्रवर प्रखर को घर भेजता है।) यहाँ प्रवर स्वयं न जाकर प्रखर को प्रेरित करता है। अतः, 'प्रेषयति' प्रेरणार्थक क्रिया हुई।

प्रेरणार्थक क्रिया में णिच् का सिर्फ 'इ' शेष रह जाता है 'ण्' और 'च्' का लोप हो जाता है। णिजन्त धातु प्रायः उभयपदी होते हैं।

लट्, लोट्, लङ और विधिलिङ्— इनमें णिजन्त के रूप 'भू' के समान होते हैं। णिच् होने से धातु के अंतिम स्वर और उपधा में 'आकार' की वृद्धि होती है। जैसे—

श्रु + णिच् > श्रावि	प्लु + णिच् > प्लावि
कृ + णिच् > कारि	चल् + णिच् > चालि
पच् + णिच् > पाचि	वह् + णिच् > वाहि।

णिच् होने से धातु के उपधा लघु स्वर का गुण हो जाता है। जैसे—

दुह् + णिच् > दोहि	लिप् + णिच् > लेपि
सिच् + णिच् > सेचि	मुच् + णिच् > मोचि
दृश् + णिच् > दर्शि	मृष् + णिच् > मर्षि।

जिन धातुओं के अन्त में 'आ' होता है, उसमें 'प्' जोड़कर तब 'अय्' जोड़ा जाता है। जैसे— दा + प + अय् + ति > दापयति

स्था + प + अप् + ति > स्थापयति।

णिच् प्रत्यय होने पर 'अमन्त' और 'घटादि' धातुओं के अन्त्य स्वर की और उपधा अकार की वृद्धि नहीं होती। जैसे—

गम्	—	गमयति	रम्	—	रमयति
दम्	—	दमयति	शम्	—	शमयति
नम्	—	नमयति	घट्	—	घटयति
व्यथ्	—	व्यथयति	जन	—	जनयति
त्वर्	—	त्वरयति	ज्वल्	—	ज्वलयति

णिच् प्रत्यय होने से 'जृ' और 'जागृ' धातुओं के स्वर का गुण होता है। जैसे—

जृ	—	जरयति	जागृ	—	जागरयति

'हन्' धातु के स्थान में घात्, 'दुष्' के स्थान में 'द्वष्' और अध्ययनार्थक 'इ' धातु के स्थान में 'आप्' हो जाता है।

जैसे— हन् — घातयति। अधि + इ — अध्यापयति।

चित्त-विराग अर्थात् चित्त की अप्रसन्नता बोध होने पर विकल्प से होता है। जैसे—क्रोधः चित्तं दोषयति वा। (क्रोध चित्त को अप्रसन्न करता है)। णिच् प्रत्यय होने से 'प्री' और 'धू' धातु के आगे विकल्प से 'न्' होता है। जैसे—

प्री — प्रीणयति/प्राययति

धू — धूनयति/धावयति।

पानार्थक 'पा' धातु के आगे 'य्' और रक्षार्थक 'पा' धातु के आगे 'ल्' होता है। जैसे— पाययति / पालयति।

यदि कर्त्ता अन्य निरपेक्ष होकर भय और विस्मय उत्पन्न करे तो णिच् प्रत्यय के परे रहने से भी धातु के स्थान में 'भीष्' और 'स्मि' धातु के स्थान में 'स्माप्' होता है और आत्मनेपद होता है। जैसे—सर्पः शिशुं भीषयते। पुरुषः सर्पेण शिशुं भाययति।

'इ' धातु (to read) इसके पहले अधि उपसर्ग निश्चित रूप से रहता है। क्री (to sell or to buy), जि (to conquer) इन धातुओं में णिच् करने पर 'इ' का 'आ' हो जाता है और 'आ' हो जाने पर इनमें 'प' जोड़कर पीछे 'अय्' जोड़ते हैं। जैसे—

अधि + इ (आ) + प + अय् + ति > अध्यापयति

क्री + प + अय + ति > क्रापयति

जि (जा) + प + अय + ति > जापयति

प्रेरणार्थक वाक्यों में दो कर्त्ता होते हैं—एक प्रेरणा देनेवाला (प्रयोजक) दूसरा क्रिया करनेवाला (प्रयोज्य)। साधारणतः, सकर्मक क्रिया के प्रयोज्य में तृतीया विभक्ति होती है और प्रयोजक में प्रथमा। जैसे—

प्रवरः प्रखरेण ओदनं पाचयति।

(प्रयोजक) (प्रयोज्य)

↓ ↓

प्रथमा वि० तृतीया वि०

परन्तु, **गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ शब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्त्ता सणौ कर्मस्यात्**—गमनार्थक, बुद्धर्यथक, भोजनार्थक, कर्मक और अकर्मक धातुओं के प्रयोज्य में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

रामः ग्रामं गच्छति।

प्रवर प्रखरं ग्रामं गमयति।

↓

द्वितीया

गुरुः शिष्यं धर्मं बोधयति।

↓

द्वितीया

भक्षेरहिंसार्थस्यच न—हिंसा भिन्न अर्थ में 'भक्षि' धातु के प्रयोज्य में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

माता पुत्रेण अन्नं भक्षयति।

↓

तृतीया

परन्तु, हिंसा अर्थ में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे— भक्षयति बृषभं शस्यम्।

नीवह्योर्न—'नी' और 'वह्' धातु के प्रयोज्य कर्त्ता में तृतीया और द्वितीया दोनों विभक्तियाँ होती हैं। जैसे— स्वामी भृत्येन / भृत्यं भारं ग्रामं नाययति / वाहयति

↓ ↓

तृतीया द्वितीया

प्रेरणार्थक क्रिया-सूची

धातु	णिच्	लट्	अर्थ
भू	भावि	भावयति	रखता है
गम्	गमि	गमयति	भेजता है
हन्	घाति	घातयति	मरवाता है
दा	दापि	दापयति	दिलाता है
स्था	स्थापि	स्थापयति	रखता है
धा	धापि	धापयति	धारण करवाता है
मा	मापि	मापयति	नपवाता है
गा	गापि	गापयति	गवाता है
हा	हापि	हापयति	छुड़वाता है
ऋ	अर्पि	अर्पयति	देता है
ह्री	ह्रेपि	ह्रेपयति	लजवाता है
क्री	क्रापि	क्रापयति	खरीदवाता है
जि	जापि	जापयति	जितवाता है
अधि-इ	अध्यापि	अध्यापयति	पढ़ाता है
रञ्ज्	रजि	रजयति	मारता है
रञ्ज्	रंजि	रंजयति	खुश कराता है
रुह्	रोहि	रोहयति	चढ़ाता है
रुह्	रोपि	रोपयति	स्थापित करता है
दुष्	दूषि	दूषयति }	चित्र को कलुषित
	दोषि	दोषयति }	करता है
भी	भापि	भापयते }	बिना किसी वस्तु के
	भीषि	भीषयते }	डराता है
भी	भायि	भाययति	किसी वस्तु से डराता है
वि-स्मि	विस्मापि	विस्मापयति	अपने से विस्मित करता है
			किसी वस्तु से चकित कर देता है
शद्	शाति	शातयति	सताता है
	शादि	शादयति	ले जाता है
जन्	जनि	जनयति	पैदा करता है
जागृ	जागरि	जागरयति	जगाता है
जॄ	जरि	जारयति	पुराना / कमजोर करता है
कृ	कारि	कारयति	कराता है
पच्	पाचि	पाचयति	पकवाता है

www.classroomnotes.in

'भू' धातु के रूप (परस्मैपद एवं आत्मनेपद)

लट् लकार (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भावयति	भावयतः	भावयन्ति
मध्यम पुरुष	भावयसि	भावयथः	भावयथ
उत्तम पुरुष	भावयामि	भावयावः	भावयामः

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	भावयते	भावयेते	भावयन्ते
मध्यम पुरुष	भावयसे	भावयेथे	भावयध्वे
उत्तम पुरुष	भावये	भावयावहे	भावयामहे

लोट् लकार (परस्मैपद)

प्रथम पुरुष	भावयतु	भावयताम्	भावयन्तु
मध्यम पुरुष	भावय	भावयतम्	भावयत
उत्तम पुरुष	भावयानि	भावयाव	भावयाम

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	भावयताम्	भावयेताम्	भावयन्ताम्
मध्यम पुरुष	भावयस्व	भावयेथाम्	भावयध्वम्
उत्तम पुरुष	भावयै	भावयावहै	भावयामहै

लङ् लकार (परस्मैपद)

प्रथम पुरुष	अभावयत्	अभावयताम्	अभावयन्
मध्यम पुरुष	अभावयः	अभावयतम्	अभावयत
उत्तम पुरुष	अभावयम्	अभावयाव	अभावयाम

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	अभावयत	अभावयेताम्	अभावयन्त
मध्यम पुरुष	अभावयथाः	अभावयेथाम्	अभावयध्वम्
उत्तम पुरुष	अभावये	अभावयावहि	अभावयामहि

लृट् लकार (परस्मैपद)

प्रथम पुरुष	भावयिष्यति	भावयिष्यतः	भावयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भावयिष्यसि	भावयिष्यथः	भावयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भावयिष्यामि	भावयिष्यावः	भावयिष्यामः

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	भावयिष्यते	भावयिष्येते	भावयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	भावयिष्यसे	भावयिष्येथे	भावयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	भावयिष्ये	भावयिष्यावहे	भावयिष्यामहे

विधिलिङ् (परस्मैपद)

प्रथम पुरुष	भावयेत्	भावयेताम्	भावयेयुः
मध्यम पुरुष	भावयेः	भावयेतम्	भावयेत
उत्तम पुरुष	भावयेयम्	भावयेव	भावयेम

www.classnotes.in

(आत्मनेपद)

प्रथम पुरुष	भावयेत	भावयेयाताम्	भावयेरन्
मध्यम पुरुष	भावयेथाः	भावयेयाथाम्	भावयेध्वम्
उत्तम पुरुष	भावयेय	भावयेवहि	भावयेमहि

सनन्त प्रकरण (Desiderative Verbs) एवं अनिट्

इच्छा अर्थ में धातु के आगे 'सन्' प्रत्यय लगता है। इसका 'स्' शेष रह जाता है। सन् प्रत्ययान्त धातु अभ्यस्त (Reduplicated) होते हैं। द्वित्व होने की स्थिति में धातु का प्रथमाक्षर वर्ग का दूसरा हो तो वर्ग के प्रथमाक्षर में बदल जाता है और चौथा अक्षर तीसरे अक्षर में बदलता है। ऐसी स्थिति में प्रथमाक्षर में दीर्घ स्वर रहने पर वह ह्रस्व हो जाता है और प्रथमाक्षर में 'अ' रहने से 'इ' हो जाता है।

सन् प्रत्यय के परे धातु के आगे 'इ' होता है; परन्तु 'अनिट्' के आगे ऐसा नहीं होता। 'सन्' प्रत्यय के परे 'इ' रहने पर धातु में उपधा लघु स्वर का गुण होता है। रुद्, विद् और मुष् धातु में उपधा लघु स्वर का गुण नहीं होता। इस प्रत्यय के परे रहने से 'ग्रह्' धातु के आगे 'इट्' नहीं होता है जबकि प्रच्छ् और गम् धातु के आगे 'इट्' होता है। इसी तरह 'सन्' प्रत्यय पर रहने से धातु का अंतिम स्वर दीर्घ होता है और 'जि' धातु के स्थान में 'गि' होता है।

सन् प्रत्ययान्त अभ्यस्त 'दा' धातु के स्थान में दित्स्, 'धा' के स्थान में धित्स्', 'आप्' के स्थान में 'ईप्स', मा के स्थान में 'मित्स', 'लभ्' में स्थान में 'लिप्स्' और 'रभ्' में स्थान में 'रिप्स्' होता है। जैसे—

दा	—	दित्सति	मा	—	मित्सति
धा	—	धित्सति	लभ्	—	लिप्सते
आप	—	इप्सति	रभ्	—	रिप्सते

कित्, तिज्, गुप्, वध्, दान्, शान् और मान् धातु के आगे विशेषार्थ में 'सन्' होता है। जैसे—

कित्	—	चिकित्सति	तिज्	—	तितिक्षते
गुप्	—	जुगुप्सते	वध्	—	वीभत्सते
दान्	—	दीदांसते	शान्	—	शीशांसते
मान्	—	मीमांसते			

सनन्त धातु-सूची

धातु	प्रत्यय	रूप	अर्थ (Meaning)
पच्	सन्	पिपक्षति	पकाना चाहता है।
पठ्	"	पिपठिषति	पढ़ाना चाहता है।
दह्	"	दिधक्षति	जलाना चाहता है।
पा	"	पिपासति	पीना चाहता है।
स्था	"	तिष्ठासति	ठहरना चाहता है।
लिख्	"	लिलेखिषति	लिखना चाहता है।
नृत्	"	निनर्तिषति	नाचना चाहता है।
रुद्	"	रुरुदिषिति	रोना चाहता है।

ग्रह्	"	जिघृक्षति	ग्रहण करने की इच्छा रखता है।
प्रच्छ	"	पिपृच्छिषति	पूछने की इच्छा रखता है।
स्वप्	"	सुषुप्सति	सोने की इच्छा करता है।
जि	"	जिगीषति	जीने की इच्छा करता है।
गम्	"	जिगमिषति	जाना चाहता है।
हन्	"	जिघांसति	जान से मारने की इच्छा करता है।
कृ	"	चिकीर्षति	करने की इच्छा करता है।
दा	"	दित्सति	देने की इच्छा करता है।
धा	"	धित्सति	धारण करना चाहता है।
मा	"	मित्सति	नापने की इच्छा करता है।
लभ्	"	लिप्सते	लेना चाहता है।
नम्	"	निनंसति	नमस्कार करना चाहता है।
पत्	"	पित्सति/पिपतिषति	गिरना चाहता है।
आप	"	ईप्सति	प्राप्त करना चाहता है।
तृ	"	तितरीषति	तैरना चाहता है।
		तितीर्षति	पार करना चाहता है।
पद्	"	पित्सते	प्राप्त करना चाहता है।
इ (to go)	"	जिगमिषति	जाना चाहता है।
अधि + इ (to read)	"	अधिजिगांसते	पढ़ना चाहता है।
नश्	"	निनंक्षति / निनशिषति	नष्ट होना चाहता है।
शक्	"	शिक्षति	सीखना चाहता है।
मुच्	"	मोक्षते/मुमुक्षते	मोक्ष प्राप्त करना चाहता है।
मृ	"	मुमूर्षति	मरना चाहता है।
दृश्	"	दिदृक्षते	देखने की इच्छा करता है।
श्रु	"	शुश्रूषते	सुनना चाहता है।
स्मृ	"	सूस्मूषते	स्मरण करने की इच्छा रखता है।
ज्ञा	"	जिज्ञासते	जानना चाहता है।
श्रि	"	शिश्रयिषति / शिश्रीषति	आश्रय लेना चाहता है।
चि	"	चिचीषति / चिकीषति	चुनना चाहता है।

यङन्त प्रकरण (Frequentative Verbs)

बार-बार करना—इस अर्थ में और अतिशय (अधिक करना) अर्थ में एक स्वर तथा आदि में व्यंजन वर्णवाले धातुओं में 'यङ्' प्रत्यय होता है। इसमें 'ङ्' का लोप हो जाता है तथा 'य्' रह जाता है। इसका रूप केवल आत्मनेपद में ही होता है। इसमें धातु के प्रथम अक्षर में 'अ' होने से 'आ' हो जाता है। धातु के अन्त में म्, न् या ल् रहने से पहले अक्षर के अकार का आकार नहीं होता और उसमें 'म्' जोड़ दिया जाता है।

जैसे— जंगम् + य + ते—जंगम्यते

सः जंगम्यते (He goes in zig-zag way)

वह टेढ़ा-मेढ़ा चलता है।

धातु के उपधा में यानी अंतिम अक्षर के पूर्व 'ऋ' रहने से द्वित्व कर देने पर 'ऋ' का 'अ' होता है और उसमें 'री' जोड़ दिया जाता है। जैसे—

नृत् + यङ्

↓ ↓ ↘

ऋ य लोप

↓

न् 'अ' (होने पर)

ननृत् + य (प्रथम नकार के बाद 'री' जोड़ने पर

नरीनृत् + य + ते = नरीनृत्यते

सः नरीनृत्यते। (वह बार-बार नाचता है।)

He dances again and again

यङन्त-सूची

धातु	प्रत्यय	रूप	अर्थ
पठ्	यङ्	पापठ्यते	बार-बार पढ़ता है।
पच्	"	पापच्यते	" " पकाता है।
भू	"	बोभूयते	" " होता है।
लप्	"	लालप्यते	" " बोलता है।
गम्	"	जंगम्यते	" " टेढ़ा चलता है।
चर्	"	चञ्चूर्यते	" " " " "
अट्	"	अटाट्स्वते	" " " " "
फल्	"	पम्फुल्यते	" " " फलता है।
दा	"	ददीयते	" " " देता है।
दृश्	"	दरीदृश्यते	" " " देखता है।
पृच्छ्	"	परीपृच्छ्यते	" " " पूछता है।
ग्रह्	"	जरीगृह्यते	" " " ग्रहण करता है।
नृत्	"	नरीनृत्यते	" " " नाचता है।
दह्	"	दंदह्यते	" " " जलाता है।
रुद्	"	रोरुद्यते	" " " रोता है।
ऋ	"	अरार्यते	" " " आता है।
श्रु	"	शोश्रूयते	" " " सुनता है।
सिच्	"	सेसिच्यते	" " " सींचता है।
चि	"	चेकीयते	" " " चुनता है।
हन्	"	जेघ्नीयते	" " " मारता है (हिंसार्थ में)
		जंघन्यते	" " " जाता है।

www.classroomnotes.in

शी	"	शाशय्यते	"	"	"	सोता है।
स्मृ	"	सास्मर्यते	"	"	"	स्मरण करता है।
पत्	"	पनिपत्यते	"	"	"	गिरता है।
घ्रा	"	जेघ्रीयते	"	"	"	सूँघता है।
जन्	"	जाजायते	"	"	"	पैदा होता है।
कृ	"	चेक्रीयते	"	"	"	करता है।
जप्	"	जञ्जप्यते	"	"	"	जपता है।
स्वप्	"	सोषुप्यते	"	"	"	सोता है।

नाम धातु (Denominative Verbs)

नाम (संज्ञा), सर्वनाम एवं विशेषण जो क्रिया-भिन्न हैं—में प्रत्यय लगाकर क्रिया का रूप बनाया जाता है—को 'नामधातु' कहते हैं।

सभी नाम धातुओं के रूप भ्वादिगणीय धातु के समान होते हैं। आत्मसंक्रान्त इच्छा बोध होने से शब्द के आगे काम्य और परस्मैपद होता है। जैसे—

आत्मनः पुत्रमिच्छति — पुत्रकाम्यति
आत्मनो धनमिच्छति — धनकाम्यति
आत्मनः यश इच्छति — यशः काम्यति

रूप

पुत्रकाम्यति	पुत्रकाम्येत्	पुत्रकाम्याभास	पुत्रकाम्याञ्चकार
पुत्रकाम्यतु	अपुत्रकाम्यत्	पुत्रकाम्यिता	पुत्रकाम्यात
पुत्रकाम्यात्	पुत्रकाम्याम्बभूव	पुत्रकामिष्यति	

आत्मसंक्रान्त इच्छा बोध होने से शब्द के आगे 'क्यच्' और परस्मैपदी होता है। क्यच् का 'य' शेष रहता है। इससे शब्द के अन्तस्थित अकार का 'ई' होता है और ह्रस्व दीर्घ होता है। जैसे— आत्मनः पुत्रमिच्छति — पुत्रीयति

आत्मनः पतिमिच्छति — पतीयति

बुभुक्षा अर्थ में 'अशन्' शब्द के आगे क्यच् होता है और अशन् शब्द के अंतिम अकार के स्थान में आकार होता है। इसी तरह पिपासा अर्थ में 'उदक्' शब्द के आगे 'क्यच्' होता है और उदक् शब्द के स्थान में 'उदन्' होता है। जैसे—

अशनायति — उदन्यति।

नमस्, तपस् और वरिवस् शब्दों के आगे करण अर्थ में क्यच् होता है। जैसे—

नमः करोति — नमस्यति
तपः करोति — तपस्यति
वरिवः करोति — वरिवस्यति।

'करना' अर्थ में 'णिच्' प्रत्यय लगता है। जैसे— प्रश्नं करोति — प्रश्नयति।

दूसरों के समान आचरण करने पर 'क्यङ्' प्रत्यय लगता है। इसका रूप आत्मनेपदी होता है। जैसे— कुमारी इव आचरति — कुमारायते।

आचरण करने के अर्थ में 'क्यप्' प्रत्यय लगता है। जैसे—

कविरिव आचरति — कवयति।

नाम धातु-सूची

आत्मनम् पुत्रम् इच्छति	—	पुत्रकाम्यति
आत्मनः यशः इच्छति	—	यशस्काम्यति
छात्रं पुत्रम् इव आचरति	—	पुत्रीयति
कृष्णः इव आचरति	—	कृष्णायते
विद्वान् इव आचरति	—	विद्वायते / विद्वस्यते
कुमारी इव आचरति	—	कुमारायते
शिष्यः पुत्रः इव आचरति	—	पुत्रायते
प्रश्नं करोति	—	प्रश्नयति
शब्दं करोति	—	शब्दयति
प्रथुं करोति	—	प्रथयति
दृढ़ं करोति	—	द्रढंयति
मृदुं करोति	—	म्रदयति
दूरं करोति	—	द्‌वयति
अन्तिकं करोति	—	नेदयति
बहुलं करोति	—	बंहयति
स्थूलं करोति	—	स्थवयति
श्रीरिव आचरति	—	श्रयति
कविरिव आचरति	—	कवयति
पितेव आचरति	—	पितृयति
राजेव आचरति	—	राजानति
मालेव आचरति	—	मालाति
शब्दं करोति	—	शब्दायते
लघुं करोति	—	लघयति
क्षुद्रं करोति	—	क्षोदयति
राजानम् इव आचरति	—	राजीयति
पानाय उदकम् इच्छति	—	उदन्यति
पानात् अन्यार्थे उदकम् इच्छति	—	उदकीयति
आचार्या मातरम् इव आचरति	—	मात्रीयति
संग्रहार्थे अन्नम् इच्छति	—	अन्नीयति
अशनम् लब्धुम्	—	अशनीयति
धनाय आकांक्षति	—	धनायति
मंत्रिणि राजनि इव आचरति	—	राजन्यति
मित्रं रिपुम् इव आचरति	—	रिपूयति
अचपलः चपलः भवति	—	चपलायते
अपंडितः पंडितः भवति	—	पंडितायते
अमलिनो मलिन भवति	—	मलिनायते
शिष्यः इव आचरति	—	शिष्टायते

www.classroomnotes.in

पितृव्यः पिता इव आचरति	—	पित्रीयते
विमाता माता इव आचरति	—	मात्रीयते
दरिद्र राजा इव आचरति	—	राजायते
बहुलं करोति	—	बंहयति
ह्रस्वं करोति	—	ह्रसयति
स्थूलं करोति	—	स्थवयति
अन्तिकं करोति	—	नेदयति
दूरं करोति	—	दवयति
उदगीर्य चर्वयति	—	रोमन्थायते
पृथुं करोति	—	प्रथयति
तपः करोति	—	तपस्यति
पवित्रं करोति	—	पवित्रयति
धवलं करोति	—	धवलयति
चिह्नं करोति	—	चिह्नयति
मृदुं करोति	—	म्रदयति
वाष्पं उद्भवति	—	वाष्पायते
फेनम् उद्भवति	—	फेनायते
धूमम् उद्भवति	—	धूमायते
ऊष्णम्	—	उष्मायते
दुखम् अनुभवति	—	दुःखायते
कृच्छम् अनुभवति	—	कृच्छायते
अभृशं भृशं भवति	—	भृशायते
अशीघ्रं शीघ्रं भवति	—	शीघ्रायते
अमन्दः मन्दः भवति	—	मन्दायते
अनुत्सुकः उत्सुकः भवति	—	उत्सुकायते
असुमनाः सुमना भवति	—	सुमनायते
अपण्डितः पण्डितः भवति	—	पण्डितायते
अनुन्मना उन्मनाः भवति	—	उन्मनायते

प्रश्न-अभ्यास

1. प्रेरणार्थक क्रिया से आप क्या समझते हैं? चार ऐसे वाक्य लिखें (संस्कृत में) जिसमें प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग हुआ हो।
2. नाम धातु क्या है? यह किन शब्दों से निर्मित होता है? पाँच नाम धातुवाले वाक्य लिखें।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक शब्द या कुछ शब्दों या एक वाक्य में लिखें—

(क) 'णिच्' प्रत्यय का प्रयोग किस क्रिया के बनाने में होता है :

(ख) णिजन्त के रूप किस धातु के समान होते हैं?

(ग) किस क्रियावाले वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं।

www.classroomnotes.in

(घ) स्वामी भृत्येन भारं वाहयति। रेखांकित पद की जगह कोई दूसरा पद लिखकर वाक्य को पुनः लिखें।

(ङ) 'दुष्' धातु से प्रेरणार्थक रूप बनाएँ।

(च) इच्छार्थ में धातु के आगे कौन-सा प्रत्यय लगता है?

(छ) नाम धातुओं के रूप किसके समान होते हैं?

(ज) दूसरों के समान आचरण करने पर धातु में कौन-सा प्रत्यय लगता है।

4. शब्द-निर्माण करें—

धातु	प्रत्यय	शब्द
कृ	णिच्	....
वह्	णिच्	....
मृष्	णिच्	....
दुह्	णिच्	....
पठ्	सन्	....
रुद्	सन्	....
जि	सन्	....
दृश्	यङ्	....
दा	यङ्	....
घ्रा	यङ्	....

5. हिन्दी या अंग्रेजी में अनुवाद करें—

(क) सर्पः शिशुं भीषयते।

(ख) क्रोधः चित्तं दोषयति।

(ग) शिक्षकः छात्रं शास्त्रं बोधयति।

(घ) सः पितरं रंजयति।

(ङ) सः जंगम्यते।

(च) शिल्पा नरीनृत्यते।

(छ) मक्षिकः जाजायते प्रतिदिनम्।

(ज) कृषकः सेसिच्यते शस्यम्।

(झ) अध्यापकः प्रश्नं करोति।

(ञ) तपस्विनः तपस्यति।

(ट) बालकः कृष्णायते तत्र।

★★★

www.classroomnotes.in